'नन्हा फ़नकार' और सीखने के प्रतिफल

अनीता ध्यानी

शिक्षिका ने पाठ्यपुस्तक के एक पाठ पर किस तरह योजना बनाकर काम किया इसका सिलसिलेवार और विस्तार से वर्णन करता है यह लेख। लेख में पाठ के उद्देश्य निर्धारित करना, उनपर उपयुक्त गतिविधियाँ सोचकर बच्चों के साथ करना, और इस दौरान बच्चे जो सीखे हैं उसका आकलन करना, आदि से सम्बन्धित अपने अनुभवों को लेखिका ने साझा किया है। सं.

यूँ तो सीखने-सिखाने का कार्य अनवरत चलता ही रहता है। लेकिन कोरोना ने जब सबको अपने घरों में क़ैद कर लिया, विद्यालय बन्द हो गए तो सभी शिक्षक टेक्नोलॉजी से आपस में जुड़े और साथ ही शुरू हुआ अपने विद्यालय में किए गए कार्यों व अनुभवों को साझा व लिपिबद्ध करने का कार्य। मेरा विद्यालय ऋषिकेश के पास एक गाँव में स्थित है। यहाँ अधिकतर लोग मज़दूरी का काम करते हैं। बच्चे घर पर घरेलू कामों में माता-पिता का हाथ बँटाते हैं, इसलिए पढ़ने-लिखने का काम स्कूल तक ही सीमित रह जाता है। इसी वजह से यह ज़रूरी हो जाता है कि स्कूल में पढ़ने-लिखने का कार्य सहज हो ताकि बच्चे सीखने में दिलचस्पी ले सकें। इस लेख में कक्षा 5 के बच्चों के साथ हिन्दी पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* से लिए गए पाठ 'नन्हा फ़नकार' की पाठ योजना और क्रियान्वयन के अनुभवों को मैंने प्रस्तुत किया है।

इस पाठ को पढ़ने पर उसके शिक्षण के उद्देश्य जो समझ आते हैं, वे हैं : कल्पनाशीलता का विकास, पठन व लेखन की क्षमता का विकास, कला व हस्तकला में रुचि का विकास, संवेदनशीलता और श्रम के प्रति आदर, हुनर के प्रति सम्मान। लेकिन सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर जब इस पाठ को देखा तो इसमें 10 से ज़्यादा सीखने के प्रतिफल चिह्नित हो गए। अब जद्दोजहद यह थी कि उन प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए क्या किया जाए, इसके निराकरण के लिए कुछ गतिविधियाँ तैयार कीं और दिवसवार पाठ योजना बनाई गई। यह पूरे 7 दिन की बनी, जिसे 1 घण्टे के पीरियड के हिसाब से पूरे 7 घण्टे बच्चों के बीच में किया गया।

पाठ में चिह्नित प्रतिफल

जैसा कि ऊपर कहा गया है, बच्चों के सीखे हुए का आकलन करने के लिए सीखने के इन प्रतिफलों को पूर्व में ही चिह्नित किया गया, ये थे :

- शब्दों का अपने सन्दर्भों में उपयोग कर वाक्य रचना कर सकेंगे।
- ख़ुद सवाल बना सकेंगे एवं जवाब ढूँढ़ सकेंगे।
- उचित उतार-चढ़ाव व हाव-भाव के साथ पाठ का आदर्श वाचन कर सकेंगे।
- अपने शब्दों में पाठ की विषयवस्तु को सुना सकेंगे।

- अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीक़ियों पर ध्यान देते हुए उनपर अपनी प्रतिक्रिया दे सकेंगे और परिचित शब्दों से वाक्य, कविता व कहानी बना सकेंगे।
- भाषा की व्याकरणिक इकाइयों– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, नुक़्ता आदि को समझकर लिख सकेंगे और प्रयोग कर सकेंगे।
- व्यवसायों के प्रति अपने ढंग से सोच सकेंगे।
- अपने अन्दर छुपे फ़नकार को पहचानते हुए व्यक्त कर सकेंगे।
- फ़न (कला) और फ़नकार (कलाकार) का वर्गीकरण कर सकेंगे।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बच्चों से कुछ गतिविधियाँ, जैसे– नाटक, चित्रकला, मॉडल निर्माण, बड़े-बुज़ुर्गों से बातचीत, आदि करवाई गईं। इस दौरान जो हुआ उसकी झलक मैं इस लेख में प्रस्तुत कर रही हूँ। कोशिश है कि इस अनुभव के हर हिस्से के कुछ उदाहरण भी दे पाऊँ। यह पूरा क्रम धीरे-धीरे काम करते-करते विकसित होता चला गया। मेरा प्रयास यही था कि बच्चों को भागीदारी व सार्थक भाषाई अभ्यास के मौक़े मिलें।

पहला दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : स्वरचित कविता* (जिसमें कामगारों के बारे में रोचक ढंग से विवरण लिखा गया है), नक़्क़ाशी युक्त चित्र, बातचीत हेतु पहले से तैयार कुछ सवाल, आदि।

कक्षा में बैठक व्यवस्था व छात्रों के पास सामग्री की उपलब्धता जाँचने के पश्चात पहली गतिविधि करवाई गई।

गतिविधि 1 : नाचें, गाएँ, चित्र बनाएँ

कविता को बच्चों के साथ मिलकर गाया और फिर दर्ज़ी, लोहार, मिस्त्री व सुनार के बारे में चर्चा करते हुए एक इमारत का चित्र दिखाया गया। चित्र में बने डिज़ाइन पर सवाल पूछे कि किसने बनाया होगा ये? कैसे बनाया होगा? क्या आप लोगों ने कभी बनाया या किसी को बनाते हुए देखा है? चर्चा के बाद बच्चों ने भी इन नक़्क़ाशियों को बनाया, कुछ ने कविता दोहराई और अन्य ने नृत्य किया। फिर बच्चों के नाम बोर्ड पर लिखकर, उनके द्वारा किया गया कार्य लिखा और उनके नाम के साथ फ़नकार शब्द को जोड़कर लिखा, जैसे– फ़नकार ईशांत, फ़नकार साहिल, आदि। उन्हें बताया गया कि चित्र बनाना, नृत्य करना, कविता गाना आदि कार्य, जो हम सभी ने किए यह सब फ़न और इन्हें करने वाले सभी व्यक्ति फ़नकार कहलाते हैं।

फ़न और फ़नकार*

काट छांट कर, सिल देता फिर
सिलवा लो पोशाक जो मर्ज़ी।
लेकर माप जो कपड़े सीता,
उसको सब कहते हैं दर्ज़ी।

करके लोहा बड़ा गरम
मार हथौड़ा धाड़-धड़म।
फिर गढ़ता उससे औजार
कहते हम उसको लोहार।

सोने का उसका व्यापार
करे न कम धेला दो चार।
गढ़ता कंगन, सुंदर हार।
कहते हम उसको सुनार।

गतिविधि 2 : आओ करें बातचीत

कुछ उदाहरण कविता से लेते हुए बातचीत की गई, जैसे– मिस्त्री का काम करना, लकड़ी पर डिज़ाइन बनाना, लोहे से औज़ार बनाना या गहने पर डिज़ाइन बनाना फ़न हैं। अब ज़रा सोचो और बताओ।

प्रश्न 1 : क्या आपने अपने गाँव में कोई ऐसा व्यक्ति देखा है, जिसमें इस तरह का कोई फ़न हो?

एक बच्चा– मेरी माँ गढ़वाली गाना गाती है, दूसरा बच्चा– मेरे दादाजी रामलीला में मामा मारीच का पाठ खेलते हैं।

प्रश्न 2 : जब आपको अपनी कला दिखाने का मौक़ा मिलता है, तो आपको कैसा महसूस होता है?

एक बच्चा– मुझे बहुत अच्छा लगता है, दूसरा बच्चा– मुझे शर्म आती है।

प्रश्न 3 : क्या आपने कभी लकड़ी, पत्थर, प्लास्टिक या मिट्टी के बर्तन पर कोई डिज़ाइन बनी हुई देखी है? यह किसने बनाई होगी?

बच्चों के उत्तर– हमारे घर की कुर्सियों पर, खम्भों और दरवाज़ों पर भी अच्छी-अच्छी डिज़ाइन बनी हुई हैं। दुकानदार ने बनाई होंगी।

प्रश्न 4 : गाँव के कुछ पुराने मकानों में आज भी लकड़ी के खम्भों पर डिज़ाइन बनी हुई हैं, उन मकानों को क्या कहते हैं? और खम्भों पर यह डिज़ाइन किसने और कैसे बनाई होंगी?

उत्तर– मेरी दादी ने बताया, तिवारी कहते हैं कि डिज़ाइन बढ़ई ने लकड़ी खुरचकर बनाई होंगी।

प्रश्न 5 : क्या गाँव के लोग हमेशा से इसी गाँव में हैं या कहीं से आए हैं?

उत्तर– पहले हम कहीं और रहते थे, मेरे दादाजी के भी दादाजी यहाँ आकर बसे।

प्रश्न 6 : आज सारे गाँव ख़ाली क्यों होते जा रहे हैं, लोग गाँव से बाहर क्यों जा रहे हैं?

उत्तर– नौकरी की तलाश में, बच्चों को अँग्रेज़ी स्कूल में पढ़ाने और इलाज के लिए।

गतिविधि 3 : आज का सवाल

यहाँ बच्चों को घर के लिए एक सवाल दिया, जिसका उत्तर उन्हें अपने बड़े-बुज़ुर्गों से पूछकर आने के लिए कहा गया :

पता करो कि आपके गाँव में लोग कब, कहाँ से और कैसे आए होंगे? लोग यहाँ क्या-क्या काम-धन्धे करते हैं और बाहर जाकर कौन-कौन से काम-धन्धे करते हैं?

दूसरा दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : चार्ट, ग्लू, पेंसिल, कलर, पाठ्यपुस्तक, ए-4 साइज़ का पेपर, चार्ट पर लिखी हुई कविता, आदि।

गतिविधि 1 : बातें पिछले दिन की

कक्षा की शुरुआत पिछले दिन के सवाल पर बातचीत से की गई। इसमें उनके जवाब सुनना और उनके द्वारा लाए गए लिखित जवाबों को एक जगह चार्ट पर चिपकाकर डिस्प्ले किया गया। फिर बच्चों का ध्यान पाठ की विषयवस्तु की ओर लाने का प्रयास किया गया। आपने अपने आसपास देखा होगा, कुछ लोग अच्छा नृत्य कर लेते हैं, कोई अच्छी चित्रकारी करता है, कोई अच्छी मिमिक्री करता है, तो कोई मिट्टी से सुन्दर आकृतियाँ बनाता है। आज आपको मिलाते हैं ऐसे ही एक नन्हे फ़नकार से जो अपनी नक़्क़ाशी के फ़न से सभी का मन मोह लेता है।

गतिविधि 2 : आओ पढ़ें अपना पाठ

मैंने पाठ पढ़ा। बीच में पाठ से प्रश्न भी किए गए जिससे छात्रों का ध्यान बना रहे। फिर छात्रों के साथ मिलकर भी पाठ पढ़ा गया।

गतिविधि 3 : पाठ से कविता

पाठ की विषयवस्तु को कविता के रूप में एक चार्ट पर लिखकर रखा गया और हाव-भाव के साथ बच्चों के साथ कविता को गाया गया। कविता बनाते समय यह ध्यान रखा गया कि कहानी की मुख्य बातें और घटनाएँ उसमें आ जाएँ। कविता की भाषा सरल और वाक्य विन्यास भी सुगम हो ताकि पाठ के प्रवाह को समझने में कोई मुश्किल न रहे। सामान्यतः दो

दो पंक्तियों को छंद में रखने की कोशिश की ताकि कविता पढ़ने और बोलने का मज़ा बना रहे। इस तरह 20-22 पंक्तियों में पाठ की पूरी बात और कहानी आ गई।

गतिविधि 4 : सुनाओ तो ज़रा

बच्चों की ज़ुबानी पाठ सुना और बीच-बीच में जहाँ वे अटक गए, उनकी मदद की। बच्चों से पाठ सुनने के बाद कुछ सवाल भी पूछे गए। जैसे– राजा को देखकर केशव क्यों सकपकाया होगा? राजा नक़्क़ाशी क्यों सीखना चाहते थे? आदि। कुछ सवाल तो पहले से सोचे हुए थे और कुछ बातचीत के दौरान व बच्चों के जवाबों से जुड़ते चले गए।

गतिविधि 5 : आज का सवाल

इसके बाद एक सवाल सोचा जिसमें बच्चों से एक समग्र रचनात्मक प्रयास की अपेक्षा थी। प्रयास यह था कि स्वाभाविक ढंग से जो काम अकसर मुश्किल व विशेष लोगों की बपौती माना जाता है, वह करने का प्रयास सभी करें। अभ्यास था, पाठ में जो तुम्हें अच्छा लगा उसपर तीन-चार लाइन की कविता बनाओ?

तीसरा दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : चार्ट, ग्लू, पेंसिल, कलर, पाठ्यपुस्तक, ए-4 साइज़ का पेपर, नक़्क़ाशी के चित्र, आदि।

गतिविधि 1 : बातें पिछले दिन की

बच्चों के द्वारा बनाई गई कविताओं को एकत्र कर कक्षा-कक्ष में डिस्प्ले किया और कुछ बच्चों से ग्रुप में कविता सुनी।

गतिविधि 2 : चित्रों से बातचीत

पाठ में पहला चित्र बुलन्द दरवाज़े का है। छात्रों के साथ बुलन्द दरवाज़े के बारे में विस्तृत बातचीत की। यह कहाँ स्थित है, किसने, कब और क्यों बनाया, आदि पहलुओं पर चर्चा की गई। अगले चित्र में नक़्क़ाशी करता हुआ बालक है जो अभी सीधी लकीर और कुछ घुमावदार डिज़ाइन बना सकता है, लेकिन वह जानता है कि एक दिन वह भी अपने पिता की तरह बारीक़ जालियाँ, कमल के फूल, लहराते हुए साँप और इठलाकर चलते हुए घोड़े, यह सब पत्थर पर उकेर पाएगा। यह पढ़ने के बाद छात्रों से प्रश्न किया। बच्चों, क्या आपने कभी केशव की तरह सोचा है कि आप क्या-क्या काम कर सकते हो? उन कामों को अपनी कक्षा में सभी बच्चों से साझा कीजिए।

यह प्रश्न भी पाठ को अनुभव से जोड़ने व उसपर लागू करने की माँग करता है। इसमें बच्चों से अपेक्षा है और यह उनके लिए अपने अनुभव व आकांक्षाओं को व्यक्त करने का मार्ग प्रदान करता है।

अगला चित्र– नक़्क़ाशी करते हुए केशव के कान में एक आवाज़ पड़ती है। 'माशा अल्लाह! यह घण्टियाँ कितनी सुन्दर हैं। तुमने ख़ुद बनाई हैं?' 'बेशक मैंने ही बनाई हैं। क्या मैं आपको पत्थरों पर नक़्क़ाशी करता नज़र नहीं आता?' इसके बाद बच्चों से प्रश्न किया, क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आपके कान में अचानक आवाज़ पड़ने से आप चौंके हों? यदि हाँ, तो लिखिए कब? और कहाँ? इसपर छात्रों के अलग-अलग जवाब आते हैं। कोई कहता है कि मैं जब नींद में था, माँ की आवाज़ से चौंक गया था। और इसी क्रम में एक बालिका कहती है कि मैं तब चौंकी थी जब किसी ने बताया कि उसे बाघ उठाकर ले गया था। फिर उसने इसका जो विवरण दिया उसे सुनने से रोंगटे खड़े हो रहे थे।

गतिविधि 3 : आज के सवाल

- गत्ते, काग़ज़ व रंगों की मदद से बुलन्द दरवाज़े का एक मॉडल बनाइए?
- पाठ में दिए अलग-अलग चित्रों को बनाते हुए उनके बारे में लिखिए?

यह अभ्यास अलग क़िस्म के हैं, किन्तु इनमें भी टेक्स्ट के साथ अलग प्रकार की अन्तःक्रिया के प्रयास के रास्ते सोचे गए हैं जिनमें अलग तरह की अभिव्यक्ति के मौक़े शामिल हैं।

चौथा दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : चार्ट, ग्लू, पेंसिल, कलर, पाठ्यपुस्तक, ए-4 साइज़ का पेपर, चार्ट पर लिखी हुई कविता, आदि।

गतिविधि 1 : बातें पिछले दिन की

बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्रों और मॉडलों को कक्षा में डिस्प्ले किया गया और उनपर बातचीत की गई कि क्या बनाया, क्यों बनाया, कैसे बनाया और क्या लिखा, पढ़कर सुनाओ व कुछ बोर्ड पर लिखकर भी दिखाओ। इस दिन पाठ में आए शब्दों के साथ कई तरह के काम किए गए। इसमें उन्हें अर्थ के स्तर पर अपरिचित लग रहे व नुक़्ते वाले शब्दों, जो लिखने में ख़ास ध्यान माँगते हैं, पर कार्य शामिल था।

गतिविधि 2 : शब्द दीवार

सभी बच्चों को अपनी-अपनी पाठ्यपुस्तक को खोलने और पाठ में आए नए शब्दों तथा ऐसे शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहा गया जिनको समझने में उन्हें परेशानी हो रही थी, इन सारे शब्दों को बच्चे बोलते गए और बोर्ड पर एक ओर लिखते गए। जैसे– पुश्तैनी, गुदगुदाना, उकेरना, कृषि, अँगरखा, माथा ठनकना, कातर आँखें, त्योरियाँ चढ़ना, उत्सुकता, सलाम, आदि। अब इन शब्दों पर बच्चों के साथ चर्चा कर समझ बनाने का प्रयास किया गया।

नुक़्ता शब्द : उर्दू, अरबी और फ़ारसी से हिन्दी भाषा में आए शब्दों के सही उच्चारण के लिए वर्णों के नीचे नुक़्ता लगाना पड़ता है। इससे शब्द का अर्थ भी बदल जाता है, जैसे– खुदा / ख़ुदा में, खुदा का मतलब खुदी हुई और ख़ुदा का मतलब भगवान। नुक़्ता एक छोटी-सी बिन्दी होती है जो वर्ण के नीचे लगती है। पाठ में आए नुक़्ता वाले शब्दों, जैसे– फ़नकार, डिज़ाइन, ज़रूर, नफ़ीस, आवाज़, नज़र, सफ़ेद, काफ़िर, तरफ़, इन्तज़ार, हुज़ूर, शहज़ादा, आदि की सूची बनाई गई। छात्रों से ऐसे वाक्य बनवाए गए जिनमें नुक़्ता वाले शब्दों का प्रयोग हो। छात्रों से उन शब्दों का उच्चारण करने को कहा।

उसके बाद प्रत्येक शब्द पर वाक्य बनाने का अभ्यास समूहों में किया गया। अब बच्चों को तीन समूहों में बाँटकर निम्न कार्य चार्ट पर करने को दिया गया :

समूह 1 : बोर्ड पर लिखे सभी शब्दों को उनके अर्थ के साथ चार्ट पर लिखकर शब्द दीवार बनाएँगे।

समूह 2 : प्रत्येक शब्द पर एक-एक वाक्य बनाएँगे और उन्हें चार्ट पर लिखेंगे।

समूह 3 : इन शब्दों में से नुक़्ता वाले शब्दों को छाँटकर उनपर एक-एक वाक्य बनाकर चार्ट पर लिखेंगे।

समूह कार्य करने के बाद बच्चों ने इसे बड़े समूह में पढ़कर साझा किया। उसके बाद इन तीनों चार्टों पर लिखे शब्दों एवं उनसे बने वाक्यों को अपनी-अपनी कॉपी में लिखा।

गतिविधि 3 : आज का सवाल

बच्चों को कहा गया कि पाठ में आए कुछ शब्दों का उपयोग करते हुए एक-एक कहानी बनाइए और एक शीर्षक भी दीजिए। रोज़ की तरह यह एक सृजन कार्य था जो लम्बा था और इसमें समग्र समझ व नया गढ़ने के अभ्यास की अपेक्षा थी।

पाँचवाँ दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : चार्ट, ग्लू, पेंसिल, कलर, पाठ्यपुस्तक, ए-4 साइज़ का पेपर, चार्ट पर लिखी हुई कविता, आदि।

गतिविधि 1 : बातें पिछले दिन की

रोज़ की तरह ही पहले बच्चों के द्वारा बनाई सामग्री, यथा– आज की कहानियों को एकत्र कर कक्षा में डिस्प्ले किया गया और उन कहानियों को बच्चों की ज़ुबानी सुना। एक दूसरे की कहानियों को देखने और पढ़ने का अभ्यास किया गया।

गतिविधि 2 : शब्दों में भेद

बच्चों से कहा गया कि आज हम पाठ के साथ एक और मज़ेदार खेल खेलेंगे। हम ऐसा करते हैं कि पाठ में आए नाम, काम, विशेषता और किसी के नाम के स्थान पर आए शब्दों के अलग-अलग कार्ड बनाते हैं। इसके लिए बच्चों के चार समूह बनाए और उन्हें अलग-अलग प्रकार के शब्द छाँटते हुए उनका शब्द कार्ड बनाने का कार्य दिया गया।

इसमें हम बच्चों की मदद करते हैं, जहाँ पर उन्हें कोई बात समझ नहीं आई या उन्होंने ग़लत सूची बना ली। जब चारों समूहों ने अपना-अपना काम कर लिया तब इन सभी शब्द कार्डों को एक जगह अच्छे-से मिला दिया, तत्पश्चात उन्हें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया शब्द के रूप में अलग-अलग करने को कहा। उन्हें बताया कि जो नाम हैं उन्हें संज्ञा कहते हैं; जो शब्द काम का बोध कराते हैं वह क्रिया कहलाते हैं; जो शब्द संज्ञा की विशेषता बताते हैं वे विशेषण; और जो शब्द संज्ञा के स्थान पर बोले जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

उन शब्द कार्डों को अब अलग-अलग कर नामों को संज्ञा के डिब्बे में, नामों के स्थान पर बोले जाने वाले शब्दों को सर्वनाम के डिब्बे में, कार्य होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया वाले और विशेषता वाले शब्दों को विशेषण के डिब्बे में रखने को कहा।

इसके बाद शिरोरेखा और पूर्ण विराम का महत्त्व बताया गया। एक शिरोरेखा के ग़लत प्रयोग से पूरे शब्द का अर्थ ही बदल जाता है उसी प्रकार अर्ध विराम और पूर्ण विराम से भी वाक्य के अर्थ बदल जाते हैं। जैसे :

'रोको मत', जाने दो।

'रोको', मत जाने दो।

गतिविधि 3 : खेल-खेल में कविता

बच्चों के साथ एक खेल खेलते हैं। जैसे पाठ में आया है 'ख़रगोश की सी कातर आँखें'। पशु-पक्षियों से तुलना करते हुए और भी बहुत-सी बातें आम बोलचाल में कही जाती हैं, जैसे– 'हिरन जैसी चाल'। ऐसी ही कुछ और बातें मिलकर ढूँढ़ते हैं और बच्चे जिन बातों को बताते हैं उन्हें बोर्ड पर लिखते हैं। जैसे– कौवे जैसी काँव-काँव, भालू जैसे बाल, जिराफ़ जैसी गर्दन, कुत्ते जैसा वफ़ादार, गाय जैसा भोला-भाला और बन्दर जैसा लाल मुँह आदि। बच्चों के साथ इन सब उदाहरणों को तुकबन्दी कर कविता के रूप में गूँथा गया :

ख़रगोश की सी कातर आँखें।

हिरन जैसी उसकी है चाल।

कौवे जैसा काँव-काँव करता।

भालू जैसे उगे हैं बाल।

जिराफ़ जैसी गर्दन उसकी।

कुत्ते जैसा है, वफ़ादार।

गाय जैसा भोला-भाला।

बन्दर सा है मुँह लाल।

गतिविधि 5 : आज का सवाल

छात्रों से कुछ ऐसी ही और बातों को इकट्ठा करने को कहा गया और उनको कविता में जोड़कर आगे बढ़ाने को कहा गया।

छठवाँ दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : चार्ट, ग्लू, पेंसिल, कलर, पाठ्यपुस्तक, ए-4 साइज़ का पेपर, आदि।

गतिविधि 1 : बातें पिछले दिन की

बच्चों के साथ पिछले दिन की गतिविधियों पर चर्चा करते हुए उनके द्वारा इकट्ठी की गई बातों को कविता में जोड़ा गया।

गतिविधि 2 : पाठ में मुहावरे

छात्रों को मुहावरों से परिचित कराया और पाठ में आए मुहावरों की मदद से चर्चा को आगे बढ़ाया। दिल धक-धक करना, बदहवास होना, आँखें सिकोड़ना, आँखें फैलाना, आँख उठाकर देखना, जैसे पाठ में आए और आँखों से सम्बन्धित अन्य मुहावरों पर बातचीत करते हुए पूछा गया कि मुहावरों के रूप में ये बातें आप लोगों ने क्या पहले भी सुनी हैं। यदि नहीं, तो ज़रा अन्दाज़ लगाओ कि इनका क्या मतलब होता होगा, आदि। ऐसे सवालों की मदद से बच्चों की इन मुहावरों पर समझ बनाई गई। इसके लिए नीचे दिए अभ्यास करवाए गए।

- बच्चों को पाठ से इन मुहावरों को छाँटकर बोर्ड पर लिखवाया गया।
- सूची बन जाने के बाद प्रत्येक मुहावरे पर चर्चा कर समझ बनाने का प्रयास किया।
- मुहावरों का अर्थ उनके सामने बोर्ड पर लिखवाया।
- मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कर लिखवाया।
- अन्य मिलते-जुलते मुहावरों को बताया और लिखवाया गया।
- इन्हें चार्ट पर और कॉपी में भी लिखवाया।

आँखों पर आधारित कुछ मुहावरों पर बच्चों के साथ चर्चा की गई। उदाहरण स्वरूप, आँखें तरेरना, आँखें लाल होना, आँखें भर आना, आँखें खुली की खुली रह जाना, आँखों का तारा होना, आँख का काँटा होना, आँखें बिछाना, आँखों में धूल झोंकना, आँखों से गिरना, आँखें दिखाना, आँख का अन्धा नाम का नैन सुख, आँखें बन्द होना, आदि।

गतिविधि 4 : हमारा पाठ और हमारा परिवेश

इसके बाद लेख की सामग्री की परिवेश से जोड़कर चर्चा की गई। बच्चे इस गतिविधि से, पाठ की विषयवस्तु का हमारे घर-गाँव एवं अन्य विषयों से जुड़ाव समझ सकेंगे। इसके लिए बच्चों से निम्न पहलुओं पर चर्चा कर समझ बनाने का प्रयास किया गया :

पुराना समाज और राजशाही : इतिहास में बुलन्द दरवाज़े का परिचय, राजा अकबर के बारे में जानकारी, उनका जीवन परिचय, युद्ध नीति, दीन-ए-इलाही धर्म के बारे में जानकारी, उनके द्वारा बनवाई गई इमारतों, क़िले आदि की जानकारी, सल्तनत के विस्तार की जानकारी, आदि पर चर्चा कर समझ बनाना।

हमारा परिवेश हमारा घर-गाँव : अपने गाँव के पुराने घरों या इमारतों पर चर्चा, जैसे– ये घर कब बने होंगे? इन घरों को हमारी भाषा में क्या बोला जाता है? किसने बनाए होंगे? इनपर कैसी नक़्क़ाशी दिखाई देती है? क्या अब भी ऐसे घर बनाए जाते हैं? अगर नहीं, तो क्यों नहीं बनाए जाते होंगे?

स्थापत्य कला : पत्थरों एवं लकड़ी पर पैटर्न, फूल, पत्ती, उड़ते हुए साँप, दौड़ते घोड़े, घण्टियाँ, पत्थरों की नक़्क़ाशी, आदि सब कला के ही नमूने हैं। स्थापत्य कला के बारे में चर्चा कर समझ बनाई गई, जैसे– भवन बनाने की विद्या या वास्तु-विज्ञान ही स्थापत्य कला है, और इसे राजगीरी भी कहते हैं। छात्रों से चित्र बनाकर रंग भरने को कहा गया।

विविध आकृतियाँ : पाठ में बहुत सारी आकृतियों का ज़िक्र किया गया है, जैसे– आयत, वर्ग, त्रिभुज, वृत्त, सीधी रेखा एवं वक्र रेखा, आदि। इन पर चर्चा करना। ये आकृतियाँ अपने घर-गाँव में हमें कहाँ-कहाँ देखने को मिलती हैं, इनके क्षेत्रफल, परिमाप, आदि पर बात करना, तत्सम्बन्धी कुछ सवाल भी बनाए गए।

लेनदेन : गाँव में लेनदेन कहाँ-कहाँ किया जाता है? मज़दूरी में, फल-सब्ज़ी व दूध बेचने में, बाज़ार में ख़रीददारी आदि करने में लेनदेन सम्बन्धी सवाल बनाकर समझ बनाने का प्रयास किया गया।

गतिविधि 5 : आज का सवाल

बच्चों से कहा गया कि अपने गाँव के पुराने घरों के बारे में बड़े-बुज़ुर्गों से पूछकर पता करो कि ये घर कब बने होंगे? इन्हें हमारी भाषा में क्या बोला जाता है? किसने बनवाए होंगे? इनपर कैसी नक़्क़ाशी दिखाई देती है? क्या अब भी ऐसे घर बनाए जाते हैं? अगर नहीं, तो क्यों?

सातवाँ दिन

समय : 1 घण्टा

आवश्यक सामग्री : चार्ट, ग्लू, पेंसिल, कलर, पाठ्यपुस्तक, ए-4 साइज़ का पेपर, वर्कशीट, आदि।

गतिविधि 1 : बातें पिछले दिन की

बच्चों के साथ गत दिवस की गतिविधियों पर बात की और उनके द्वारा गाँव के पुराने घरों के बारे में लिखकर लाई गई बातों को चार्ट पर चस्पा कर कक्षा में डिस्प्ले किया गया।

गतिविधि 2 : आओ ज़रा सोचें

सवालों के ज़रिए कुछ मूल्यों एवं परिस्थितियों पर बच्चों की समझ बनाने के लिए, कुछ सवालों पर बच्चों से चर्चा करना, जैसे– राजा अकबर ने केशव से पूछा कि क्या तुम मुझे ये 'नक़्क़ाशी का' काम सिखाओगे?

इस वाक्य पर सवाल पूछे : क्या अब राजा होते हैं? यदि नहीं, तो क्यों? राजा क्या काम करता होगा? राजा के काम और नक़्क़ाशी के काम में क्या कुछ फ़र्क़ है?

केशव राजा से पूछता है कि क्या आप यह काम कर पाएँगे? राजा कहता है कि परसों ही तो मैंने एक मिट्टी की डलिया ढोने में किसी की मदद की थी, तो क्या यह काम उससे भी ज़्यादा कठिन है?

इस पर पूछा : राजा बड़ा या केशव बड़ा? किस वजह से बड़ा? उम्र की वजह से या काम / ओहदे की वजह से? क्या हमें काम को छोटा-बड़ा मानना चाहिए? काम की वजह से क्या ये छोटा-बड़ा होना आप लोगों को ठीक लगता है? क्या सभी को बराबर मानना चाहिए? अगर सभी को बराबर माना जाए तब कैसा रहेगा? क्या राजा अकबर काम की वजह से लोगों को छोटा-बड़ा मानते रहे होंगे?

बच्चों से प्रश्न किए गए कि क्या आपने कभी किसी की मदद की है? घर में, घर के बाहर गाँव में? या कहीं किसी पशु की, पक्षी की या इंसानों की?

बच्चों से उनके शब्दों में सुना कि उन्होंने किस-किस की मदद की है और कैसे? बच्चों को मौक़ा दिया गया कि वे अपने अनुभवों को सबके सम्मुख साझा करें।

गतिविधि 3 : अरे वाह! हमने सीखा

बच्चों को निम्न टास्क एक वर्कशीट के रूप में करने को दी गई :

प्रश्न 1. पता हो तो लिखिए।

कृषि के उपकरणों के नाम लिखिए :

....

पत्थर किन कार्यों में उपयोग में आता है? उनके नाम लिखिए :

....

लकड़ी से बनने वाली वस्तुओं के नाम लिखिए :

....

बढ़ई के औज़ारों के नाम लिखिए :

....

प्रश्न 2. निम्न शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

बुदबुदाना ....

फुसफुसाना ....

गुनगुनाना ....

बड़बड़ाना ....

प्रश्न 3. नीचे दिए गए नुक़्ता शब्दों से एक कविता बनाइए :

फ़नकार, ज़रूर, नज़र, काफ़िर, इन्तज़ार, हुज़ूर, मज़दूर, मज़बूत

प्रश्न 4. 'नन्हा फ़नकार' पाठ को अपने शब्दों में लिखिए?

....

किसने, कितना सीखा ?

बच्चों के साथ इन गतिविधियों को करने के बाद, निर्धारित किए गए सीखने के प्रतिफलों के आधार पर उनका आकलन किया गया। बच्चों ने समूह में कार्य करना सीखा जिससे उनमें एक दूसरे की बात सुनना, साथ मिलकर काम करना, समय का ध्यान रखते हुए काम करना, स्वयं को अभिव्यक्त करना, आदि आदतें भी विकसित हुईं।

ऊपर किए गए आकलन के बाद बच्चों के सीखे हुए पर मेरी राय

एक दृष्टि से देखा जाए तो पूर्व में होने वाली सभी गतिविधियों से सीखने के साथ-साथ निरन्तर आकलन भी होता आ रहा है। जब हम बच्चों को इन अलग-अलग गतिविधियों में अपनी लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति देते हुए निरन्तरता में देखते रहते हैं तो बच्चों के सीखने को लेकर हमारी भी एक स्तर की समझ बनती रहती है, जो हमें उनके बारे में सीखने के प्रतिफलों के सापेक्ष सही राय बनाने में मदद करती है। हो सकता है कि अभी भी कुछ बच्चे सीखने के प्रतिफल के अनुरूप न सीख पाए हों, उनको ध्यान में रखते हुए अगले पाठ की गतिविधियों में उन्हें सिखाने पर ज़्यादा ध्यान दिया जाएगा, परन्तु यह हम तभी कर सकेंगे जब पिछले पाठ में हुए आकलन का विश्लेषण हमारे पास हो। देखा जाए तो आकलन हमें यह दृष्टि दे जाता है कि अब किस बच्चे को क्या मदद करनी है। इस प्रकार हमारा 'नन्हा फ़नकार' पाठ पूरे 7 दिनों तक चला और उसपर पूरे 10 सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर कार्य किया गया और अन्त में उन्हीं को ध्यान में रखकर बच्चों का आकलन भी किया गया।

आकलन ने मुझे न केवल हर बच्चे की क्षमता को जानने में मदद की बल्कि कक्षा में क्या काम किया जाना है, यह निर्धारित करने में भी मदद की। मैंने पाया कि कुछ बच्चे कक्षा शिक्षण में काफ़ी रुचि लेते हैं और काम भी तय समय से पहले कर लेते हैं। मुझे महसूस हुआ कि ये अन्य बच्चों को सिखाने एवं उनसे गतिविधियाँ करवाने में मदद कर सकते हैं और समूह का नेतृत्व कर सकते हैं। साथ ही यह भी समझ आया कि किन बच्चों के साथ किस ख़ास प्रकरण पर पुनः काम करना होगा।

अनीता ध्यानी विगत ढाई दशक से शिक्षा में काम कर रही हैं। वे वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय देवराना, जिला पौड़ी, उत्तराखंड में प्रधानाध्यापिका हैं। वे प्राथमिक कक्षाओं में सभी विषय पढ़ाती हैं। उनकी कहानी, कविताएँ एवं लेख लिखने और हिन्दी भाषा शिक्षण में विशेष दिलचस्पी है। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ मिलकर बच्चों के लिए बाल साहित्य मेलों का आयोजन किया है।

सम्पर्क : anudhyani929@gmail.com